समय पर निराई-गुड़ाई करें

# खेती री बातां

दवा छिड़काव में सावधानी बरतें

वर्ष–15 अंक–8 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 अगस्त 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये


## कम वर्षा या देर से वर्षा की स्थिति में अपनाई जाने वाली कृषि क्रियाएं

कम वर्षा की स्थिति किसानों, कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विस्तार कर्मियों के लिए परीक्षा की घड़ी है। इन तीनों के सम्मिलित प्रयासों से ही इससे पार पायी जा सकती है। आज किसान भाईयों को जरूरत है उन्नत कृषि तकनीक को सही समय पर व सही तरीकों से अपनाने की।

वर्षा की इन विषम परिस्थितियों में फसल उत्पादन के साथ ही पशुओं के लिए पर्याप्त चारे की व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। आइये जानते हैं वर्षा की इन विपरीत परिस्थितियों में अपनाई जाने वाली कृषि तकनीक के बारे में :–

### देर से वर्षा होने पर

★ वर्षा के 1–15 अगस्त तक प्रारम्भ होने की स्थिति में तिल, मूंग तथा चारे के लिये ज्वार/बाजरा बोयें।

★ 16–31 अगस्त तक वर्षा होने की स्थिति में चारे के लिये ज्वार/बाजरा बायें।

**मूँग–** एम.यू.एम.–2, आर.एम.जी.–62, आर.एम.जी.–268,के–851, एस.एम.एल.–668, पूसा बैसाखी, गंगा–1 (जमनोत्री), एस–8, एम.एल.–267, जी.एम.–04, आर.एम.जी. 492, जी–04

**तिल–** आर.टी.–46, आर.टी.–125, आर.टी.–127, टी.सी.–25, प्रताप, आर.टी.–124

**बाजरा–**राज बाजरा चरी, राजको, जायन्ट, एल–72, एल–74

**ज्वार–** एस.एस.जी.–59–3, एम.पी. चरी, राजस्थान चरी–1, राजस्थान चरी–2, राजस्थान चरी–3, पूसा चरी–6, एम.एफ.एस.एच.–3

### दो वर्षा के बीच में लम्बे समय तक सूखे की स्थिति

★ सामान्य समय पर बुवाई के 10–15 दिन बाद ही सूखे की स्थिति होने पर बोई गई फसलों के बीज अंकुरित नहीं होने अथवा अंकुरण उपरान्त सूख जाने पर वर्षा पुनः हो जाती है तो वैकल्पिक फसलों/अल्पावधि किस्मों की 15–20 प्रतिशत अधिक बीज दर रखकर पुनः बुवाई की जानी चाहिये।

★ यदि सूखे की स्थिति 30–45 दिन बाद आती है तो उपलब्ध नमी को ध्यान में रखते हुए उचित पौध–संख्या बनाए रखने हेतु फसल की छँटाई करें। अनाज तथा दलहनी/तिलहनी फसलों की अन्तर फसलों में से अनाज वाली फसल के पौधों को उखाड़कर चारे के रूप में काम में लें।

★ यदि लम्बे अन्तराल पर वर्षा नहीं होने से 15 अगस्त तक फसल सूख जाती है और इसके बाद वर्षा होती है तो नमी संरक्षण उपाय अपनायें तथा तोरिया, सरसों, अलसी, धनियाँ व चना फसलों की बुवाई के लिए खेत खाली रखें।

★ सूखे के कारण फसल खराब हो जाने पर इसका चारे के रूप में उपयोग करें।

★ सतह आवरण (मल्चिंग) द्वारा नमी संरक्षण करें। इसके लिए खरपतवारों को निकालकर कतारों के बीच में ही डाल दें अथवा पौलीथिन शीट्स, जैविक खाद आदि डालें।

★ यथा संभव निराई–गुड़ाई बार–बार करें। इससे खरपतवार नष्ट होते हैं और मिट्टी की नमी अधिक समय तक बनी रहती है।

### वर्षा जल्दी समाप्त होने पर अपनाई जाने वाली कृषि क्रियाएँ (15–20 अगस्त)

★ कीट एवं व्याधियों से फसल की सुरक्षा के लिए पौध संरक्षण रसायनों का पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इससे कीट–व्याधियों की रोकथाम के साथ पानी की भी पूर्ति होती है।

★ बाजरा फसल में नमी तनाव ( Moisture stress )को कम करने के लिए फूल आने से पूर्व एवं फूल आने की अवस्था पर थायोयूरिया 0.1 प्रतिशत (1ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव सिफारिश अनुसार किया जाये।

★ खेत से खरपतवार निकालें और उखाडे हुए खरपतवारों के पौधे फसलों की कतारों के बीच सतह आवरण के रुप में बिछावें ताकि भूमि की सतह से वाष्पीकरण कम हो।

★ मिलवाँ फसलों में से संवेदनशील फसल जिसके नष्ट होने की आशंका हो, उखाड़ दें। उखाड़ी हुई फसल को चारे के रुप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

★ खड़ी फसल में नमी संरक्षण हेतु कतारों के बीच बक्खर चलाकर मृदा आवरण करें।

★ सूखे की स्थिति में खड़ी फसल में नत्रजन उर्वरक नहीं डालें।

★ रबी के दौरान खडीनों में गेहूँ व जौ या चने की अगेती बुवाई करें।

### पशुओं के लिए गुणवत्ता युक्त चारे की व्यवस्था

★ हल्की वर्षा की स्थिति में मक्का अथवा बाजरे के साथ चँवला की बुवाई की जा सकती है।

★ पेड़ों की पत्तियाँ एवं फली/फल आदि को चारे के रूप में काम में लेना चाहिए। विलायती बबूल की फलियों में लगभग 13 प्रतिशत प्रोटीन और 25–30 प्रतिशत सुक्रोज होता है।

★ पशुओं के लिए पूरक आहार यथा

शेष पृष्ठ 4 पर.....

## कृषि मंत्री के जन्म दिन पर रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क के 82 वें जन्म दिवस के अवसर पर 15 जुलाई को पशुधन भवन परिसर स्थित राजस्थान स्टेट वेटेरीनरी काऊंन्सिल जयपुर में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 280 लोगों ने रक्तदान किया। श्री बुरड़क ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 15 अगस्त से शुरु होने जा रही पशुओं के लिए ''मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा वितरण योजना'' को सफल बनायें। इस अवसर पर कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य विभागों के अधिकारी एवं प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से आये कृषक उपस्थित थे।

जालोर जिले के साँचोर तहसील में परावा गांव के **कृषक मित्र श्री धनराज मेघवाल** ने अपने क्षेत्र से 116 कृषकों को ''खेती री बातां'' अखबार का सदस्य बनाया है। इनके इस प्रशंसनीय कार्य के लिए इन्हें ''खेती री बातां'' परिवार की ओर से बधाई।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

★ इस माह के कृषि कार्य
★ परख
★ गुणी कमला
पृष्ठ 2

★ खरीफ फसलों की प्रमुख बीमारियां एवं कीट
★ प्याज भण्डारण योजना
पृष्ठ 3

★ खरपतवार घटाएं, पैदावार बढ़ाएं
पृष्ठ 4

# इस माह के कृषि कार्य

## फसलोत्पादन

★ खरीफ की फसलों की अच्छी बढ़वार के लिए खरपतवारों को निकालने के लिए निराई–गुड़ाई करें। इससे खरपतवार तो नष्ट होते ही हैं, साथ ही मिट्टी में हवा का संचार भी होता है।

★ जहां सिंचाई की सुविधा हो वहां अनाज वाली व तिलहन की खड़ी फसल में यूरिया छिटक कर देवें।

★ रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए नीम आधारित कीटनाशक बहुत प्रभावी हैं। इसके अलावा मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. या एसीफेट 75 डब्ल्यू.पी. दवा की 15 मिलीलीटर मात्रा और इमिडाक्लोप्रिड दवा की 5 मिलीलीटर मात्रा 15 लीटर पानी की टंकी में घोलकर छिड़काव करें। एक समय पर इनमें से किसी एक कीटनाशक का ही छिड़काव करना चाहिए।

★ मूंग, चंवला एवं मोठ की फसल में फली छेदक लट का प्रकोप दिखाई देने पर मैलाथियान 50 ई.सी. दवा की 1.5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

## बागवानी

★ अनार में तितली का प्रकोप दिखाई देने पर फूल व फल बनते समय कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम दवा का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

★ आंवले के पौधों पर बोरेक्स 0.4 प्रतिशत (4 ग्राम प्रति लीटर पानी) व जिंक सल्फेट 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर छिड़काव करें।

★ पपीते के पौधों में यूरिया 25 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से देवें। समय पर निराई–गुड़ाई करते रहें।

## सब्जियाँ

★ टमाटर, बैंगन, मिर्च, प्याज, गोभी आदि के पौधों की रोपाई करें। इसके लिए 6 इंच बड़ी व स्वस्थ पौध का चयन करें। पौध को रोपाई से पहले ट्राइकोडर्मा से जरुर उपचारित करें। पांच लीटर पानी में 100 ग्राम ट्राइकोडर्मा घोलें। इस घोल में पौधों की जड़ों को आधा घण्टे तक डुबोयें। इसके बाद खेत में रोपाई करें।

★ फूलगोभी की पछेती किस्मों जैसे पूसा स्नोबाल, के–1, हिसार–1, सलेक्शन–7 आदि की बुवाई करें। इसकी बीज दर 375–400 ग्राम प्रति हैक्टर रखें।

★ पत्ता गोभी की पूसा ड्रम हैड, संकर हाइब्रिड–10 आदि किस्मों की नर्सरी में बुवाई करें।

★ गाजर की देशी किस्म जैसे पूसा केसर की बुवाई करें। इसकी बीज दर 5–6 किलो प्रति हैक्टर रखें।

★ मूली की पूसा–रश्मि किस्म की बुवाई करें। बीज दर 10–12 किलो प्रति हैक्टर रखें।

## पशुपालन

★ पशु एवं पशुशाला को बाह्य परजीवियों से मुक्त रखने के लिये कीटनाशक दवा का छिड़काव करें। प्रभावित पशुओं पर ब्यूटोक्स 2 मिलीलीटर दवा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। गौशाला में ब्यूटोक्स दवा का 4 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें। 21 दिन बाद इस छिड़काव को दोहराएं।

★ पशुशाला को साफ–सुथरा व सूखा रखें तथा पानी न जमा होने दें।

## परख

जुलाई, 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले कृषकों में से लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री राधेश्याम**
   **पुत्र श्री रतन लाल शर्मा**
   **ग्रा0 पो0– रणधीरगढ़,**
   **तहसील– वैर,**
   **जिला–भरतपुर**
2. **श्री दुर्गाशंकर मेहर**
   **पुत्र श्री बसन्ती लाल मेहर**
   **ग्र0 पो0– सिरपोई,**
   **तहसील–पिड़ावा,**
   **जिला–झालावाड़**

### इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 खड़ी फसल में सफेद लट नियंत्रण के लिए कौन सा रसायन काम में लिया जाता है ?

प्र.2 प्याज भण्डारण योजना पर कुल कितना अनुदान देय है ?

**तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –**

**उप निदेशक कृषि (सूचना),**
**कमरा नम्बर 118,**
**पंत कृषि भवन, जयपुर 302005**

# खरीफ फसलों की प्रमुख बीमारियां एवं कीट

स्वस्थ फसल पाने के लिए कीट व रोगों का नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है। कीट–रोगों से बचाव के लिये फसल का नियमित निरीक्षण करते रहें और इनका प्रकोप दिखाई देने पर तुरन्त रोकथाम के तरीके अपनाएं। खरीफ फसलों की प्रमुख बीमारियों व कीड़ों का विवरण निम्नानुसार है–

## बाजरा में हरित बाल रोग

इस रोग में पत्तियों के नीचे की सतह पर भूरे रंग की कवक एवं उपरी सतह पर भूरी धारियां दिखाई देती हैं। पौधे के पुष्पक्रम एवं सिट्टे पूर्ण रुप से या आंशिक रुप से छोटी मुड़ी हुई पतली–पतली पत्तियों के झुण्ड के रुप में परिवर्तित हो जाते हैं।

नियन्त्रण हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट करें। कटाई पूर्व रोगग्रस्त सिट्टों को काटकर जला देवें। 4–5 साल का फसल चक्र अपनाएं। रोग दिखाई देने पर बुवाई के 21 दिन बाद मैन्कोजेब दवा का 2 किलो प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

## तिल का शीर्ष गुच्छ रोग

फूल आने के समय पुष्प भाग छोटी–छोटी पत्तियों में बदल जाते हैं। इस प्रकार फूल परिवर्तित पत्तियों के गुच्छे के रुप में दिखाई देता है। नियन्त्रण हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला देवें। रोग प्रसार में सहायक कीटों को नष्ट करने के लिए क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. 2 मिलीलीटर दवा का प्रति लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के 25 दिन बाद एवं 40 दिन बाद छिड़काव करें।

## मूंगफली का टिक्का रोग

पत्तियों पर लाल भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। धब्बों के कारण पत्ते बहुत बड़ी मात्रा में गिर जाते हैं। नियन्त्रण हेतु अगस्त के प्रथम सप्ताह में (40 दिन की फसल होने पर) 1.5 किलो मैन्कोजेब का प्रति हैक्टर की दर से 200–300 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा आधा ग्राम कार्बेण्डेजिम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

## मक्का तना छेदक

इस कीट के लार्वा मक्का, बाजरा, ज्वार, गन्ना आदि की पत्तियों को खुरच कर खाते हैं और फिर तने में सुराख करके प्रवेश कर जाते हैं जिससे छोटे पौधों का बढ़ने वाला सिरा मर जाता है। नियन्त्रण हेतु पौधे के कीटग्रस्त भागों को नष्ट करें। फसल बोने के 15 व 30 दिन बाद फोरेट 10 जी. या कार्बोफ्यूरॉन 3 जी. 7–8 किलो प्रति हैक्टर की दर से पौधों के पोटों में डालें अथवा कार्बेरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 1.8 किलो प्रति हैक्टर 400 से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

## फड़का

यह खरीफ की सभी फसलों में पत्तियों को खाकर नुकसान करता है।

नियन्त्रण हेतु खड़ी फसल में मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर भुरकें।

## सोयाबीन में गर्डल बीटल

इस कीट की मादा शाखाओं पर घेरे बनाकर अण्डे देती हैं। लटें अण्डों से निकलकर डण्ठल का गूदा खाती हुई तने की तरफ जाकर तने में प्रवेश कर जाती हैं। इनके कारण 20–30 प्रतिशत तक हानि होती है। जल्दी बोयी गयी फसल पर इसका प्रकोप ज्यादा होता है।

नियन्त्रण हेतु 30–35 दिन की फसल पर फेनाथियॉन या डायमिथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 600 से 1000 मिलीलीटर दवा का प्रति हैक्टर की दर से 400–600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

## मूंग का पीला मोजेक

पत्तियों पर अनियमित पीले एवं हरे चकत्ते बन जाते हैं तथा पत्तियां सिकुड़ी

शेष पृष्ठ 4 पर.....

# प्याज भण्डारण योजना – प्याज बचाएं, मुनाफा कमाएं

**(डी.पी.शर्मा, परियोजना प्रबन्धक, ए.ई.जेड़, रा.रा.कृ.वि.बोर्ड, जयपुर)**

राज्य में औसतन 40 हजार हैक्टर में प्याज की खेती होती है, जिसमें करीब 4.0 लाख टन प्याज प्रतिवर्ष पैदा होता है। अजमेर व अलवर में प्याज रबी व खरीफ दोनों मौसम में उगाया जाता है, जबकि शेष जिलों में रबी में ही उगाया जाता है। रबी प्याज की मुख्य आवक अप्रेल से मई तक होती है। एक साथ आवक बढ़ने से प्याज के दाम घटना स्वाभाविक हैं और किसानों को घटे हुए दामों पर प्याज बेचने को मजबूर होना पड़ता है। राज्य में प्याज के पर्याप्त भण्डारण, फसलोत्तर व मूल्य संवर्धन की सुविधा नहीं होने, वजन घटने, सड़ने तथा अंकुरण होने के कारण प्याज की करीब 30 से 40 प्रतिशत हानि हो जाती है। इस हानि को वैज्ञानिक भण्डारण, मूल्य संवर्धन जैसे पावडर, फ्लेक्स, पेस्ट, बनाकर कुछ कम किया जा सकता है।

उपरोक्त समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उद्यान–विभाग **राष्ट्रीय बागवानी मिशन** के तहत् प्याज भण्डार गृह निर्माण पर लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम रू0 50 हजार प्रति भण्डारगृह अनुदान उपलब्ध कराता है। साथ ही राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड ने भी उद्यान–विभाग द्वारा स्वीकृत भण्डार गृहों को रू. 20 हजार प्रति ईकाई अतिरिक्त अनुदान देने का प्रावधान किया है।

**इस प्रकार 25 मै. टन क्षमता के प्याज भण्डार गृह निर्माण पर एक कृषक को कुल 70 हजार रू. तक अनुदान प्राप्त हो सकता है।** अतः

कृषक प्याज का जुलाई से अगस्त तक भण्डारण कर सितम्बर बाद अच्छी कीमतों पर बेच सकते हैं। प्याज भण्डार गृहों में लहसुन भी भण्डारित किया जा सकता है।

**भण्डार गृह निर्माणः–**

प्याज भण्डार गृह पूर्व से पश्चिम दिशा में बनाये जाते हैं। 25 मै.टन क्षमता के प्याज भण्डार गृह निम्न माप के बनाये जा सकते हैं :–

- ★ लम्बाई –40 फीट
- ★ चौड़ाई –12 फीट
- ★ ऊँचाई –06 फीट
- ★ मध्य की ऊँचाई –10 फीट
- ★ दो गाले (ढेर) के बीच रास्ते की चौड़ाई –04 फीट
- ★ हवा के लिए जमीन से फर्श की ऊँचाई –01 फीट 6 इन्च (1'6'')

**निर्माण सामग्रीः–**

भण्डार गृह की दीवारें बाँस या लकड़ी की पट्टियों की बनाई जा सकती हैं तथा छत एसबैस्टस की चादर अथवा केलू की बनाई जा सकती है। फर्श के सपोर्ट के लिए मोटी लकड़ी या सरियों को काम में लाया जा सकता है। प्रत्येक लकड़ी की पट्टी के बीच हवा के लिए 1 इन्च का फासला छोड़ा जाता है। वर्षा की बौछारों से बचाव के लिए छत दीवारों से 2–3 फीट बाहर निकली होनी चाहिए, बचाव के लिए टाट के बोरों को भी काम में ले सकते हैं। छत तथा प्याज के बीच 2 फीट की जगह हवा के आवागमन को चाहिए।

प्याज को शीत गृहों में 0–2 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा 65–70 प्रतिशत नमी पर भी भण्डारित कर सकते हैं। परन्तु निकालने के तुरन्त बाद प्याज में अंकुरण की समस्या रहती है।

**उपयुक्त किस्मेंः–**

देशी किस्मों के बजाय उन्नत किस्में बोनी चाहिए क्योंकि इनकी भण्डारण क्षमता देशी किस्मों से अधिक है। आर.ओ.–1, आर.ओ.–59, एन. 2–4–1, अर्का निकेतन, एग्रीफाउण्ड रेड राज्य के लिए सिफारिश की गई किस्में हैं।

**प्याज भण्डारण से पूर्व सावधानीः–**

★ खुदाई के बाद प्याज को छाया में अच्छी तरह सुखायें ताकि कन्द से मिट्टी व जड़ अलग हो जायें तथा ऊपरी छिलका सख्त हो जाये।

★ प्याज में अंकुरण की रोकथाम हेतु खुदाई से 1 माह पूर्व 2500 पी.पी.एम. (2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) मैलिक हाईड्राजाईड का घोल छिड़कें।

★ भण्डार गृह ऊँचे स्थान पर हों, जहाँ पानी का भराव न हो सके व हवा का आवागमन ठीक हो।

★ वर्षा की बौछारों से बचाने के लिए टाट के खाली बोरों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

***अधिक जानकारी के लिए*** – *दूरभाष नं0 0141–2227824 (बोर्ड मुख्यालय) तथा 0141–2227606 (उद्यान विभाग) पर वार्ता करें अथवा अपने क्षेत्र के सहायक निदेशक (उद्यान) से संपर्क करें।*

***ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"***

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

**डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14**

आर.एन.आई – 70296/98

**प्रेषक–**

**उप निदेशक कृषि (सूचना)**

**118, पंत कृषि भवन,**

**जयपुर–302005**

**प्रेषिति–**

# खरपतवार घटाएं

लट जीरा

गाजर –घास

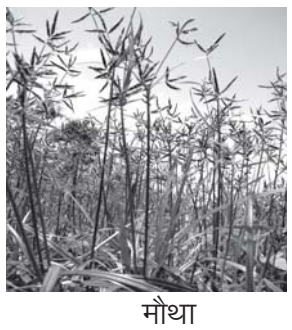

मौथा

# पैदावार बढ़ाएं

हजार दाना

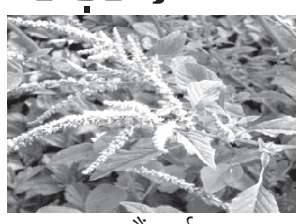

चौंलाई

इन दिनों खेतों में विभिन्न प्रकार के खरपतवार दिखाई देते हैं, जिनमें सांटा, चौंलाई, मौथा, ओंगा, बड़ी दूधी, छोटी दूधी, बोंकना, रुंखड़ी, ढांकढेला, हजारदाना, भांकड़ी, गोखरु, गाजर घास, कैथी, मकड़ा घास, झरनिया घास आदि मुख्य हैं। ये सभी तेजी से बढ़ते हैं। यदि फसल की बुवाई के एक महीने तक इन्हें रोका नहीं जाये तो ये फसल की बढ़वार रोक सकते हैं और उपज को कम कर देते हैं।

ये बिन बुलाए मेहमान फसलों का न केवल भोजन और पानी चुराते हैं बल्कि फसलों के साथ स्थान और प्रकाश के लिये प्रतिस्पर्धा भी करते हैं। इतना ही नहीं खरपतवार कीड़ों व रोग के जीवाणुओं को भी शरण देते हैं। अतः खरपतवार का सही तरीके से सही समय पर नियंत्रण करके ही आशा अनुरुप पैदावार ली जा सकती है।

खेत में आपने निराई–गुड़ाई कर ली होगी। यदि नहीं तो आप तुरन्त निराई करके हाथ से खरपतवार निकालें। जरूरत हो तो दूसरी बार निराई–गुड़ाई करें। समय पर खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रत्येक फसल के लिए क्रान्तिक अवस्था तथा इस अवस्था पर खरपतवार नियंत्रण नहीं करने पर होने वाली हानि की सीमा निम्नानुसार है :–

| फसल | क्रान्तिक अवस्था (दिन) | उपज में हानि (%) |
|---|---|---|
| सोयाबीन | 20–45 | 20–60 |
| मक्का | 15–45 | 40–60 |
| बाजरा | 30–45 | 15–60 |
| मूंग | 15–30 | 25–50 |
| मूंगफली | 40–60 | 40–50 |

जहाँ बाजरे के साथ अन्य फसल की मिलवां खेती की हो, वहां केवल निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकालें। गुड़ाई करते समय ध्यान रखें कि पौधों की जड़ें न कट जायें। गुड़ाई 2 इंच से ज्यादा गहरी नहीं करनी चाहिये। कम वर्षा वाले स्थानों पर फसल की कतारों के बीच पुराने भूसे या सरसों की पिछली फसल के अवशेष या स्थानीय सामग्री जैसे धमासा की बिछावन करने से भी खरपतवार नियंत्रित होते हैं। ऐसी पलवार से मिट्टी में नमी संरक्षित रहती है और पैदावार बढ़ती है। बाजरे के खेत में व उसके आसपास अंजन घास हो तो निराई करके नष्ट करें वरना चैंपा कीट फैलने की आशंका बनी रहती है।

बाजरा, ज्वार, मक्का की फसल में रुंखड़ी (स्ट्राइगा) फसलों की जड़ों में अपनी जड़ डालकर फसल की खुराक व पानी सोखती रहती है। रुंखड़ी बारानी दशा में ज्यादा होती है। इसके नियंत्रण के लिये ढाई किलो 2,4–डी (सोडियम लवण) 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर छिड़काव करें तथा इसी रसायन को सवा किलो प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के 8–10 सप्ताह बाद दोहराएं।

अनाज फसलों के बाद मूंगफली हमारी प्रमुख नकदी फसल है। इसकी बुवाई के 45 दिन बाद तक खेत को खरपतवार रहित रखना ज्यादा पैदावार लेने के लिये आवश्यक है। एक निराई–गुड़ाई तो 30 दिन की फसल होने तक पूरी कर लेनी चाहिये। बाद में आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। जमीन में मूंगफली की सूइयां बनना शुरु होने के बाद गुड़ाई बिलकुल न करें। जहां निराई–गुड़ाई करना मुश्किल हो वहां खरपतवारनाशी रसायन का उपयोग करना चाहिये।

मूंग, मोठ, चंवला, सोयाबीन की फसलों में आवश्यकतानुसार शुरुआती अवस्था से ही निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकालते रहें। हम चाहते हैं कि खरपतवार घटे और लागत भी कम से कम आए ताकि मुनाफा बढ़े। इसके लिये **"समन्वित खरपतवार प्रबंधन तकनीक"** अपनानी होगी। यह अपने आप में कोई विधि नहीं है बल्कि यह तो खरपतवारों की रोकथाम के लिये प्रयोग की जाने वाली अनेक विधियों का संयोजन है। हम जानते हैं खरपतवारों को नष्ट करने के लिये कोई एक विधि प्रभावी नहीं होती इसलिये समन्वित खरपतवार प्रबंधन का मौलिक ध्येय कर्षण, यांत्रिक, रासायनिक और जैविक नियंत्रण की विभिन्न विधियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करके खरपतवारों की रोकथाम करना है। अतः किसान भाइयों को खरपतवारों की रोकथाम न केवल फसलों में ही, बल्कि पड़ती भूमि, मेड़, अनुपयोगी भूमि और अन्य मौसमों में भी करनी होगी। तभी हमारे खेत खरपतवारों से मुक्त रहेंगे और आशानुरुप पैदावार मिल सकेगी।

.....**पृष्ठ 1 का शेष**

यूरिया मोलेसेज मिनरल ब्लॉक आदि के उत्पादन एवं उपयोग को बढ़ाया जावे।

★ संरक्षित नमी अथवा हल्की सिंचाई देकर सितम्बर माह में सरसों, गोभी–सरसों अथवा मक्का की बुवाई कर नवम्बर में चारे के रुप में कटाई कर खेत में रबी फसल की बुवाई कर सकते हैं।

★ सिंचित अवस्था में जल्दी हरा चारा प्राप्त करने के लिए सितम्बर माह में बरसीम अथवा चाईनीज गोभी की बुवाई करें। कम पानी की अवस्था में सैंजी अथवा रिजका की बुवाई करें।

★ विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा ऋतु में पेड़ों अथवा खाली क्षेत्रों में उगने वाली बहुवर्षीय घासों यथा गिनी घास, नेपियर घास आदि को काटकर एकत्रित कर चारे की कमी वाले क्षेत्रों में भिजवाया जा सकता है।

★ अनाज वाली चारे की फसलों में यूरिया का छिड़काव करने पर उनमें अधिक वृद्धि होती है तथा प्रोटीन की मात्रा बढ़ती है।

.....**पृष्ठ 3 का शेष**

हुई सी छोटे आकार की हो जाती हैं। यह बीमारी जीवाणु के कारण होती है एवं कीटों द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे पर फैलती है।

नियन्त्रण हेतु मूंग की रोगरोधी किस्में आई.पी.एम. 02–03 व पी.डी.एम. 139 (सम्राट) बोनी चाहिए। रोगग्रसित पौधों को निकाल दें। जीवाणु को फैलाने वाली सफेद मक्खी के नियन्त्रण हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 डबल्यू. एस. सी. दवा का एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

## मूंगफली का कॉलर रोट रोग

मूंगफली की खड़ी फसल में इसका प्रकोप होने पर रोगी पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें। जहां पानी उपलब्ध हो वहां 2.5 किलो ट्राइकोडर्मा को 100 किलो वर्मी कम्पोस्ट या गोबर की खाद में मिलाकर खेत में सायंकाल भुरकें इसके तुरन्त बाद सिंचाई कर दें।

## मूंगफली में पीलिया रोग

इस रोग में फसल की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। रोकथाम के लिए हरा कसीस 5 ग्राम प्रति लीटर पानी या गंधक का तेजाब एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव आवश्यकतानुसार फूल आने के बाद करें।

## खड़ी फसल में सफेद लट नियंत्रण

यह पौधों की जड़ें काटकर नष्ट कर देती हैं इससे पौधा सूख जाता है।

खड़ी फसल में सफेद लट की रोकथाम के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर दवा प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ दें या दवा को बजरी (35–40 किलो) में मिलाकर खेत में छिटक कर सिंचाई कर दें। इससे सफेद लट की छोटी अवस्था को सफलतार्पूवक नियंत्रित किया जा सकता है।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक – श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक – श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक – कु. पूनम चौधरी
परामर्श – श्री के. आर. यादव
डिजाइन – श्री आर. मैसी



कृषि सूचना मुद्रणालय/जुलाई 2012/141/15200